राष्ट्रीय एकता के प्रतीक: लौह पुरुष सरदार पटेल

- लेखक : मृत्युंजय दीक्षित
- तारीख : October 31, 2026

ब्रिटिश शासन की समाप्ति के बाद नवस्वतन्त्र भारत के राजनीतिक और प्रशासनिक एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में हुआ था। उनका पैतृक गाँव करमसद था। उनके पिता झबेरभाई पटेल धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और माता का नाम लाडबाई था। झबेरभाई के विषय में यह भी प्रचलित है कि वे 1857 के स्वाधीनता संग्राम के दौरान रानी लक्ष्मीबाई के पक्ष में लड़े थे।

वल्लभभाई की प्रारम्भिक शिक्षा करमसद में हुई। इसके बाद वे अपने गाँव से कुछ दूरी पर स्थित पेटलाद में पढ़ने जाने लगे। आगे उन्होंने नडियाद से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। बचपन से ही उनमें अध्ययन के साथ दृढ़ता और नेतृत्व के गुण दिखाई देते थे। उनके बाल्यकाल से जुड़ी कई घटनाएँ उनके साहसी और दृढ़ स्वभाव का परिचय देती हैं। एक प्रचलित प्रसंग के अनुसार विद्यालय से लौटते समय जमीन में गड़े नुकीले पत्थर से उन्हें चोट लगी। वे पीछे रुक गए और उस पत्थर को उखाड़ने लगे। साथियों के पूछने पर उन्होंने कहा कि यह पत्थर दूसरों को भी चोट पहुँचा सकता है। वे उसे उखाड़कर ही आगे बढ़े।

उनके साहस से जुड़ा एक अन्य प्रसंग फोड़े के उपचार का है। उन दिनों गाँवों में फोड़े को गर्म लोहे की सलाख से दागने की पद्धति प्रचलित थी। नाई गर्म सलाख लगाने का साहस नहीं कर पा रहा था। कहा जाता है कि वल्लभभाई ने स्वयं सलाख लेकर उपचार कर लिया और पीड़ा को धैर्यपूर्वक सहन किया।

युवा वल्लभभाई पटेल: दृढ़ व्यक्तित्व से सार्वजनिक जीवन की ओर

वकालत से स्वाधीनता आन्दोलन तक

वल्लभभाई पटेल आगे की विधि शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए और बैरिस्टर बने। भारत लौटने के बाद उन्होंने अहमदाबाद में सफल वकालत प्रारम्भ की। महात्मा गांधी के सम्पर्क में आने के बाद उनके सार्वजनिक जीवन की दिशा बदलने लगी। 1917 और 1918 के दौरान वे गांधीजी के नेतृत्व में चल रहे जनआन्दोलनों से निकटता से जुड़े। खेड़ा सत्याग्रह ने उन्हें किसान आन्दोलन और राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर दिया। इसके बाद उन्होंने धीरे धीरे अपनी सफल वकालत से दूरी बनाई और राष्ट्रीय जीवन को प्राथमिकता दी। उन्होंने स्वदेशी जीवन शैली अपनाई और कांग्रेस संगठन में उनकी भूमिका लगातार बढ़ती गई।

बारडोली सत्याग्रह और 'सरदार'

1928 का बारडोली सत्याग्रह वल्लभभाई पटेल के राजनीतिक जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण घटनाओं में से एक था। तत्कालीन सरकार द्वारा भूमि राजस्व में की गई वृद्धि का किसानों ने विरोध किया और पटेल ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने गाँव गाँव जाकर किसानों को संगठित किया और आन्दोलन को अनुशासित तथा अहिंसक बनाए रखने पर जोर दिया। सरकारी दबाव और सम्पत्ति जब्ती जैसी कार्रवाइयों के बावजूद किसान संगठित रहे। अन्ततः सरकार को मामले की जाँच करानी पड़ी।

जाँच में बढ़ी हुई राजस्व दर को उचित नहीं माना गया और इसे घटाकर लगभग 6.03 प्रतिशत कर दिया गया। बारडोली आन्दोलन की सफलता के बाद वल्लभभाई पटेल को व्यापक रूप से 'सरदार' कहा जाने लगा। इस आन्दोलन ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रभावशाली संगठनकर्ता और किसान नेता के रूप में प्रतिष्ठित किया।

बारडोली सत्याग्रह: सरदार पटेल के नेतृत्व की पहचान

स्वतन्त्र भारत और रियासतों का एकीकरण

स्वतन्त्रता के बाद सरदार पटेल देश के प्रथम उपप्रधानमन्त्री और गृह मन्त्री बने। यह काल भारत के राजनीतिक एकीकरण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। ब्रिटिश शासन की समाप्ति के समय भारत में सैकड़ों देशी रियासतें थीं। उनके भारत संघ में एकीकरण की बड़ी जिम्मेदारी सरदार पटेल के सामने थी। इस कार्य में वी.पी. मेनन ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अधिकांश रियासतों को बातचीत और समझौते के माध्यम से भारत संघ में सम्मिलित किया गया। जूनागढ़ और हैदराबाद जैसे मामलों में परिस्थितियाँ अधिक जटिल थीं।

जूनागढ़ के नवाब ने पाकिस्तान में सम्मिलित होने का निर्णय किया, जबकि वहाँ की अधिकांश जनता भारत में रहना चाहती थी। राजनीतिक घटनाक्रम और बाद में हुए जनमत संग्रह के बाद जूनागढ़ भारत में सम्मिलित हुआ। हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय स्वीकार नहीं किया। बातचीत के प्रयास सफल न होने के बाद सितम्बर 1948 में भारत सरकार ने 'ऑपरेशन पोलो' के नाम से पुलिस कार्रवाई की। इसके बाद हैदराबाद का भारत में विलय हुआ। रियासतों के एकीकरण में सरदार पटेल की दृढ़ता, व्यवहारिकता और प्रशासनिक क्षमता ने नवस्वतन्त्र भारत के राजनीतिक मानचित्र को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाई।

जम्मू कश्मीर का प्रश्न

जम्मू कश्मीर का प्रश्न अन्य रियासतों की तुलना में अधिक जटिल परिस्थितियों में सामने आया। पाकिस्तान समर्थित कबायली आक्रमण, महाराजा हरि सिंह द्वारा भारत में विलय और उसके बाद उत्पन्न राजनीतिक परिस्थितियों ने इसे दीर्घकालीन राष्ट्रीय प्रश्न बना दिया। 5 अगस्त 2019 को केन्द्र सरकार ने जम्मू कश्मीर से सम्बन्धित संवैधानिक व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन किए। अनुच्छेद 370 के प्रावधान निष्प्रभावी किए गए और जम्मू कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम के माध्यम से पूर्व राज्य को जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख के रूप में दो केन्द्रशासित प्रदेशों में पुनर्गठित किया गया।

जम्मू-कश्मीर में सरदार पटेल, नवम्बर 1947

चीन और तिब्बत को लेकर सरदार पटेल की चिन्ता

सरदार पटेल अपने कर्तव्य निर्वहन में दृढ़ थे और परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता रखते थे। तत्कालीन प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू के साथ अनेक विषयों पर उनके विचारों का आदान प्रदान होता रहता था। चीन और तिब्बत को लेकर भी सरदार पटेल ने अपनी चिन्ता व्यक्त की थी। तिब्बत में चीन की बढ़ती गतिविधियों और भारतीय सीमाओं पर उसके सम्भावित प्रभाव को लेकर उन्होंने सावधानी बरतने की आवश्यकता बताई थी। उनका मानना था कि तिब्बत की स्थिति में परिवर्तन भारत की सुरक्षा के लिए नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर सकता है। बाद के दशकों में भारत और चीन के सम्बन्धों में उत्पन्न सीमा विवादों के कारण उनके इस पत्राचार और सुरक्षा सम्बन्धी चिन्ताओं की चर्चा होती रही है।

सरदार पटेल की स्मृति

स्वतन्त्र भारत में सरदार पटेल के योगदान के मूल्यांकन को लेकर समय समय पर राजनीतिक और इतिहास सम्बन्धी बहसें भी होती रही हैं। उनके समर्थकों का मत रहा है कि रियासतों के एकीकरण और प्रशासनिक ढाँचे के निर्माण में उनके योगदान को अधिक व्यापक रूप से सामने लाया जाना चाहिए था। आज देश में अनेक संस्थाएँ, परियोजनाएँ और स्मारक उनके नाम

से जुड़े हैं। गुजरात के एकता नगर में नर्मदा नदी के निकट सरदार पटेल की स्मृति में 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' स्थापित की गई है। इसकी ऊँचाई 182 मीटर है और यह विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है। इसका लोकार्पण 31 अक्टूबर 2018 को किया गया था।

गुजरात के वल्लभ विद्यानगर में सरदार पटेल विश्वविद्यालय तथा नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर बाँध भी उनके नाम से जुड़े प्रमुख संस्थान और परियोजनाएँ हैं। देश में राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक सम्पर्क को बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' और विभिन्न सांस्कृतिक संगमों के माध्यम से अलग अलग क्षेत्रों के बीच संवाद और परिचय को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है।

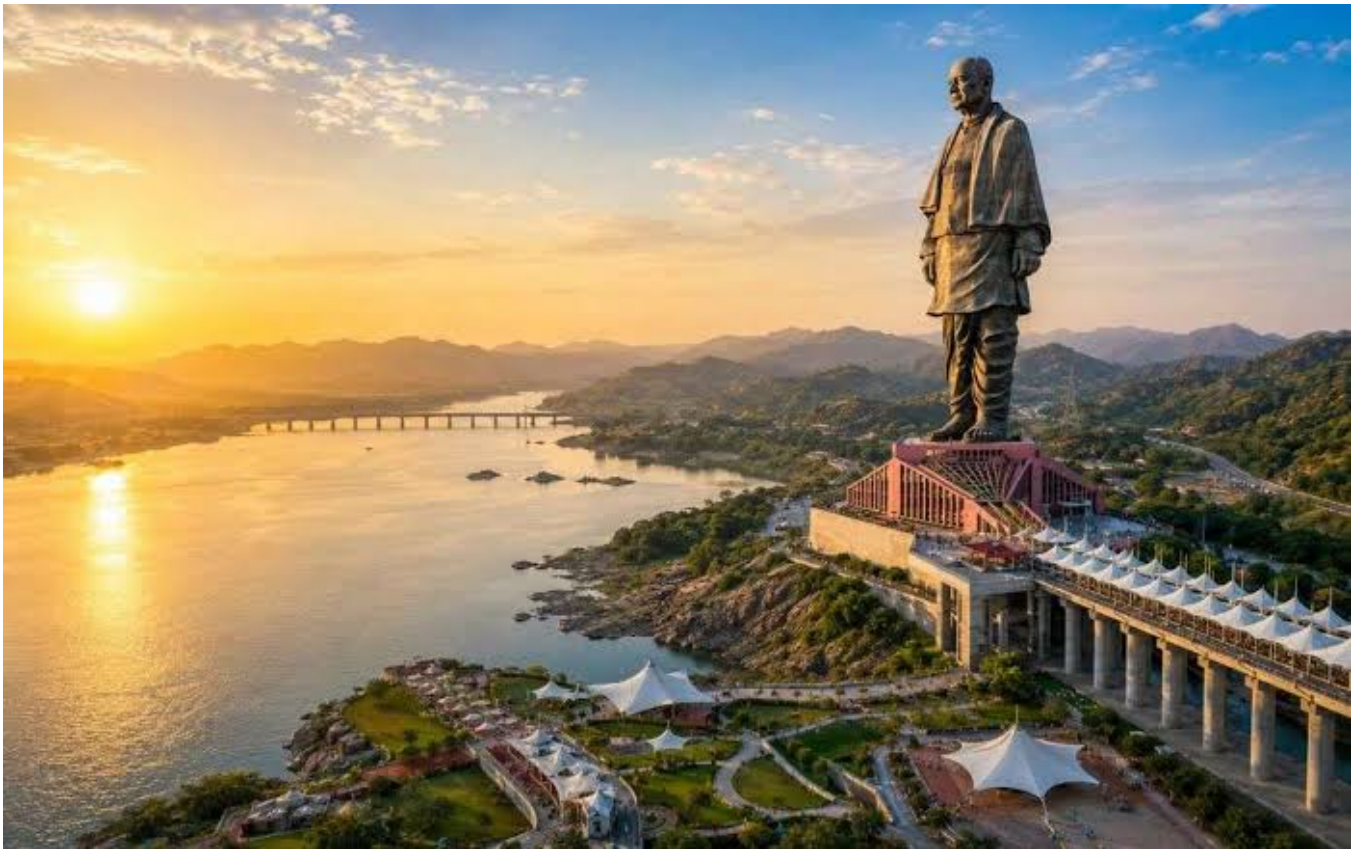

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी: सरदार पटेल की राष्ट्रीय विरासत

राष्ट्रीय एकता दिवस

सरदार वल्लभभाई पटेल की जन्मतिथि 31 अक्टूबर को देशभर में 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करने वाले विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। सरदार पटेल का सार्वजनिक जीवन किसान आन्दोलनों, राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम, प्रशासनिक संगठन और देशी रियासतों के एकीकरण से जुड़ा रहा। इसी कारण उनका नाम आधुनिक भारत के राजनीतिक एकीकरण के प्रमुख शिल्पियों में लिया जाता है। राष्ट्रीय एकता दिवस पर उनका स्मरण केवल एक महापुरुष को श्रद्धांजलि देने का अवसर नहीं, बल्कि यह समझने का भी अवसर है कि विविधताओं से भरे भारत को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति, सक्षम प्रशासन और राष्ट्रीय हित के प्रति स्पष्ट प्रतिबद्धता कितनी आवश्यक है।

लेख-
मृत्युंजय दीक्षित
लखनऊ, उत्तर प्रदेश